# लॉकडाउनः पढ़ने-लिखने का अवसर

– साहबउद्दीन अंसारी

**लॉकडाउन के दौरान जहां एक ओर डर और घबराहट का माहौल था वहीं इस दौरान कुछ रचनात्मक करने के अवसर भी थे। इस दौरान हमने पढ़ने-लिखने के अवसर ढूंढ निकाले और छूटे हुए पढ़ने के चस्के को दोबारा हासिल किया।**

सबकुछ सामान्य चल रहा था, हम सभी अपने कामों में व्यस्त चल रहे थे और जीवन के हर क्षेत्र में सरपट दौड़े जा रहे थे। किसी को अंदाजा नहीं था कि हम एकदम से अपने घरों में कैद हो जायेंगे। नए वर्ष का स्वागत किया पर हमें यह मालूम नहीं था कि यह वर्ष हमारे जिंदगी में भूचाल ला देगा। टीवी में समाचार सुनकर, और उसकी भयावहता को देखकर दिल बैचेन होने लगा, ऐसा लगने लगा मानो अब सब कुछ समाप्त होने वाला है। हर तरफ मायूसी व डर का माहौल बनने लगा, लोग एक–दूसरे से दूर होने लगे, एक–दूसरे को छूने, गले–मिलने, हाथ मिलाने से परहेज करने लगे। अपने, अपनों से दूर होने लगे और दहशत भरा माहौल बन गया। एक दिन के स्वैच्छिक लॉकडाउन के बाद 23 मार्च से हम अपने घरों में कैद हो गए, राशन, दूध, सब्जी, फल आदि से महरूम हो गए। इतना भी वक्त नही मिला और न आभास ही हुआ कि ऐसा हो जाएगा और न ही राशन इत्यादि रख पाएं। सबसे ज्यादा उन्हें परेशानी होने लगी जो दैनिक वेतन भोगी एवं मजदूरी कर जीवन यापन करते थे। क्योंकि उन्हें संभलने का मौका नहीं मिला। अचानक हुये इस लॉकडाउन से सब रुक गया। हर फल, सब्जी, ठेले वाला, घर में काम करने वाली बाई आदि कोरोना का वाहक दिखने लगे। इस लॉकडाउन में अचानक परिवार के एक सदस्य की मृत्यु हो जाने के कारण लॉकडाउन में बरेली जाना हुआ। जाते समय स्थिति भयावह मंजर देखने को मिला जिसमें बच्चे, बूढ़े, औरतें आदमी सभी पैदल जा रहे थे। किच्छा से बरेली के बीच की दूरी को इन्होंने पैदल ही नापना शुरू किया। जाने को तो हम चले गए पर वापस आते समय भोजीपुरा टोल पर हमको रोक लिया गया। वहां मुझे बहुत असहजता हुई क्योंकि हमें रोक दिया गया वह कोई बड़ी

फोटोः गूगल

बात नहीं थी पर जो गालियां व अपशब्द सुनने को मिले वह अब तक कभी नहीं सुना था। उनके हाथ जोड़ने पड़े, मृतक की पोस्ट मार्टम रिपोर्ट दिखाया पर उससे भी उनका दिल नहीं पिघला। काफी देर तक असहाय स्थिति में होने के बाद उन्होंने आखिरकार आगे जाने की इजाजत दी लेकिन चुनौतियां कम नहीं हुई। जगह–जगह कार रोकी गई और गालियां सुनने को मिली। लेकिन मुझे लगता है कि यह दोष उनका नहीं था यह समय कि मांग थी। मन में डर था कि हम घर कैसे पहुचेंगे, क्योंकि घर में छोटे बच्चे ही थे और उन्हें देखने वाला कोई नहीं था। खैर, हम जैसे तैसे घर पहुंचे ईश्वर को धन्यवाद दिया। लॉकडाउन में मेरे एक अन्य रिलेटिव की मृत्यु हो गई जहां जाना संभव न हो सका और हम अफसोस कर के ही रह गए। अपनों की मृत्यु हो जाने पर ऐसी असहज स्थिति बड़ी भयावह थी जो हमारे दिल दिमाग में बैठ गयी। टीवी पर जब ऐसी खबरें आती तो हम उनके मर्म को महसूस कर सकते थे क्योंकि ऐसा हमारे साथ भी घटित हो चुका था।

इन सब के बीच हमें घर पर ही रहकर कार्य करना आरम्भ किया, अपने घर परिवार, दोस्तों एवं शिक्षक साथियों के साथ ही एन.जी.ओ. के सदस्यों से बातचीत प्रारम्भ कर दी। इन दिनों टीवी में जो भयावह तस्वीर दिख रही थी उस परिस्थिति में यह जरूरी था कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ रहें एवं सकारात्मक सोचें। इसी बीच हम सभी शिक्षक साथियों को फोन कर उनसे बात करने लगे। जिसमें उनके हाल चाल जानना, घर परिवार का कुशल क्षेम पूछना और साथ ही वे इस समय अपना समय कैसे व्यतीत कर रहे हैं? इस सम्बन्ध में उनसे बातचीत होने लगी। शिक्षक साथियों से बातचीत से समझ में आया कि हम जिस मानसिक स्थिति से गुजर रहे हैं वे भी वैसा ही महसूस कर रहे हैं।

हमने शिक्षक साथियों से यह भी समझने का प्रयास किया कि उनकी रुचि क्या है? उनसे बातचीत में समझ में आया कि कुछ शिक्षक साथियों को पढ़ने का शौक है, उन्हें बाल साहित्य एवं कुछ पुस्तकों की सॉफ्ट कापी पढ़ने को दिया। उनके पढ़ने के रुझान को देखते हुए यह विचार आया कि क्यों न ऐसे समूह का गठन किया जाय जिसमे निरंतर पढ़ने–लिखने का कार्य चलता रहे और उन आलेखों पर विचार विमर्श भी हो।

इसी बीच योजना बनायी गयी कि कुछ ऐसा किया जाय जिससे हम शिक्षक साथियों के साथ हर हफ्ते कुछ न कुछ बात करते रहें। साथ ही शिक्षकों के बीच पढ़ने–लिखने की संस्कृति का विकास किया जाय, इसके लिए हर हफ्ते वाट्सएप समूह का गठन कर उसमें कुछ आलेख भेजे जायें जिसमें शिक्षक साथी अपनी प्रतिक्रिया लिखकर साझा करें एवं सप्ताह में एक दिन 1 से 1:30 घंटे टी–कान (वर्चुअल मोड़) के माध्यम से इन आलेखों पर बातचीत की जाय।

जितना मजेदार आलेखों को पढ़कर प्रतिक्रिया देना था उससे भी ज्यादा मजेदार सभी की प्रतिक्रिया को पढ़ना और सबके विचारों से रू–ब–रू होना था। टी–कान के दौरान उन सभी आलेखों पर विस्तार से बात होती और सन्दर्भ व्यक्ति एक कुशल अध्यापक की तरह उस आलेख की हर बारीकी के बारे में विस्तार से बात रखते जिसमें उसकी भाषा शैली, आलेख के माध्यम से लेखक क्या बात करना चाह रहा है? हमारे काम के साथ कैसे जुड़ा है? आदि। हमें अच्छी डायरी के नमूने देखने को मिले, अपने काम का दस्तावेजीकरण करने के तरीके, रीडिंग कॉर्नर की पुस्तकों का उपयोग, बच्चों को नियमित पढ़ने के मौके कैसे दिए जायं? कक्षा के वातावरण आदि पर विस्तार से चर्चा परिचर्चा होती।

सृजन समूह के इस काम को तीन चरणों में देख सकते हैं–

पहला– आलेख पढ़ना, उस पर प्रतिक्रिया देना और टी–कान में विस्तार से बात करना। इसमें प्रतिदिन 6 आलेख भेजे जाते थे।

दूसरा चरण– इसमें 15 दिन शैक्षिक लेखन कार्यशाला के तौर पर कार्य किया गया जिसमे 22 शिक्षक साथियों ने आलेख लिखे साथ ही प्रत्येक सप्ताह 3 आलेख भेजे गए जिन पर बात होती थी।

तीसरा चरण– इसमें प्रत्येक सप्ताह 3 आलेख भेजे जाते जिसमे 1 मुख्य आलेख होता जिसमे कुछ प्रश्न होते जिन पर शिक्षक साथियों को अपनी प्रतिक्रिया देनी होती थी।

तालिका –1 सृजन समूह में साझा किये गए आलेख

पढ़ने–लिखने की इस संस्कृति के विकास के लिए "सृजन समूह" का गठन किया गया रुद्रपुर ब्लाक के शिक्षक साथियों से इस हेतु संपर्क किया गया साथ ही ऊधमसिंह नगर जिले के अन्य शिक्षक साथी जिन्हें पढ़ने–लिखने में रुचि थी उन्हें भी संपर्क कर इस समूह से जोड़ा गया। इस समूह की पहली ऑनलाइन बैठक 16 अप्रैल को टी–कान के माध्यम से 5 से 6:30 बजे तक की गयी जिसमें 19 शिक्षक साथी जुड़े। इसमें कुछ तकनीकी खामियों के कारण कई बार संपर्क टूटा। अंततः यह सिलसिला शुरू हुआ और इसमें अन्य शिक्षक साथियों को जो पढ़ने–लिखने में रुचि रखते थे उन्हें जोड़ा गया। दूसरा टी–कान माइक्रोसॉफ्ट टीम एप के माध्यम से किया गया। इसमें भी कुछ तकनीकी खामियां रहीं पर जल्दी ही उसे दूर कर लिया गया और सभी शिक्षक साथियों का इस एप के उपयोग हेतु अभिमुखीकरण किया गया। धीरे–धीरे पढ़ने–लिखने का यह सिलसिला चल पड़ा। शुरुआत में प्रत्येक दिन एक आलेख भेजे जिस पर शिक्षक साथियों को पढ़कर उसमे अपनी प्रतिक्रिया लिखनी थी।

सप्ताह में एक बार टी–कान (वर्चुअल मोड) में इन सभी

आलेखों पर दी गई प्रतिक्रिया पर चर्चा की जाती और इन आलेखों में क्या बात कही जा रही है? उसकी विशेषता क्या है? भाषा शैली के साथ ही हमारे कक्षा–कक्ष से इनका क्या जुड़ाव है इन पर बात की जाती। इन आलेखों में साहित्य की प्रत्येक विधा से परिचय कराया गया। इस समूह को किसी विषय से बांधकर नही रखा गया बल्कि विविधता रखी गई जिससे हर तरह के आलेख पढ़ने को मिले और पढ़ने का मजा लिया जा सके। इनमें कहानी, कविता, यात्रा वृतांत, संस्मरण, शिक्षक डायरी, कक्षा अनुभव, इतिहास, विज्ञान, गणित ईवीएस आदि से संबधित आलेख शामिल हैं। इस समूह को 16 अक्टूबर को छः माह पूरे हो गए। इस दौरान लगभग 65 शिक्षक साथी जुड़े। चूंकि यह समूह स्वैच्छिक था अतः किसी प्रकार का कोई दबाव नहीं था। वे स्वेच्छा से लेख पढ़े और अपनी प्रतिक्रिया लिखें साथ ही टी–कान में जुड़ें ऐसी सभी से अपेक्षा थी।

इस प्रकार धीरे–धीरे पढ़ने का चस्का लगा और 100 से अधिक आलेख जो विभिन्न विधाओं के थे इसमें साझा किये गए। इस प्रकार हमने लगभग 100 आलेख तो पढ़े ही इसके साथ ही अन्य साथियों के द्वारा लिखी गई प्रतिक्रिया को भी पढ़ा जिससे एक ही आलेख को अलग–अलग नजरिये से देखा गया था। मैं सामाजिक विज्ञान का विद्यार्थी एवं शिक्षक रहा, पर विषय की बाउंड्री को तोड़कर अन्य विषय के पुस्तकों को भी पढ़ता रहता था, इनमे से ज्यादातर सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, साहित्य या बच्चों से संबंधित बाल साहित्य को पढ़ता था। इन्हें सिर्फ पढ़ने के लिए पढ़ता था या अपनी काम की चीज को लिया करता था इनके गहराई में कम ही पहुंच पाया था। इन आलेखों को पढ़कर इनकी भाषाई सौन्दर्य का अहसास पहली बार हुआ और किसी लेख को देखने का नजरिया क्या हो इसकी समझ बनी।

पढ़ने का चस्का ऐसा लगा कि आलेख समूह में आते ही उसे पढ़ने का मन करता। पढ़ने के साथ ही लिखने का कार्य भी चलता रहा, इस छः माह में समूह के अनुभव, कक्षा प्रक्रिया के मेरे अनुभव, बचपन की यादों को लिखा जिसे समूह में साझा किया गया। इनमें से कक्षा प्रक्रिया पर लिखे अनुभव को 'टेक हिंदी डाट इन' में पब्लिश भी करवाया। साथ ही सृजन समूह में साझा किये गए आलेखों की सराहना भी हुई।

एक अच्छी बात यह भी थी कि इस पूरी प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण किया गया जिससे किये गए काम को समझने में मदद मिले एवं शिक्षक साथियों से लगातार बातचीत भी होती रही। जितनी बातचीत इस लॉकडाउन के दौरान हुई उतना तो कभी नहीं हुई। इस बातचीत में न सिर्फ समूह, बल्कि ब्लॉक व जिले के अन्य शिक्षक साथी शामिल हैं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान न सिर्फ पढ़ने–लिखने का कार्य हुआ बल्कि हमारे सोचने के नजरिये में भी बदलाव आया। दस्तावेजीकरण एवं अनुभव लेखन पर हाथ आजमाया जिसमे कुछ हद तक सफलता भी मिली। इस लॉकडाउन में न सिर्फ आलेख पढ़े बल्कि अन्य पुस्तकें जिनमे NCERT की गणित एवं ईवीएस, हैण्डबुक हिंदी, गणित, अंग्रेजी, दिवास्वप्न, साफ माथे का समाज, रूम ऑफ द रूफ, उड़ान, सामजिक बदलाव के लिए शिक्षा, पंचायती राज–चुनौतियाँ एवं संभावनाएं आदि पढ़ीं।

अच्छी पठन सामग्री का चुनाव कैसे करें? यह एक बड़ा सवाल हम सभी में मन में उभरता है। इसमें सन्दर्भ व्यक्ति ने लगन एवं तन्मयता से हम सभी के लिए सामग्री उपलब्ध कराई जिसने न सिर्फ पढ़ने में रुचि का विकास किया बल्कि हमें नियमित पाठक बनाए रखा, हम इन लेखों के साथ ही अन्य पाठय पुस्तकों को पढ़ने के प्रति भी प्रेरित हुए। इस बात को तब और मजबूती मिलती है जब हमारे शिक्षक साथी कहते हैं कि "अपने स्कूल भ्रमण के दौरान उन्होंने 40 शिक्षक साथियों के पढ़ने–लिखने से सम्बंधित जानकारी एकत्रित की जिसमें से एकाध शिक्षक ने ही पुस्तक पढ़ने की बातकही" और आज कई साथी पुस्तकों पर चर्चा कर चुके हैं और कर रहे हैं। कुछ शिक्षक साथियों में पढ़ने का चस्का इस कदर लगा कि उन्होंने समूह में साझा किये गए आलेख को पढ़कर रात के 12 बजे और उसके बाद भी अपनी प्रतिक्रिया को लिखकर साझा किया।

*(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ऊधमसिंह नगर से जुड़े हैं)*